पाठ 14. मानुष हौं तो

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में स्व-जागरूकता का कौशल विकसित करना है ताकि वे अपनी पसंद व नापसंद की पहचान कर सकें। रसखान द्वारा कृष्ण भक्ति को समर्पित इन सवैयों में कृष्ण से जुड़ी वह हर चीज़, कवि को प्रिय है जिसके साथ कृष्ण का रागात्मक संबंध रहा होगा। ब्रज के बाग-बगीचे, गलियाँ हों या वह कौआ जिसने कभी बालक कृष्ण के हाथ से झपटकर रोटी ही खाई होगी। जो भी कृष्ण के स्नेह का, सानिध्य का पात्र रहा, चाहे वह गोवर्धन पर्वत ही क्यों न हो, कवि रसखान उसके साथ आतंरिक जुड़ाव महसूस करते हैं। भक्ति और प्रेम का अनूठा उदाहरण हैं कवि रसखान के ये रस में सने सवैये।

पाठ का सार

कवि रसखान की धार्मिक आस्था बेशक किसी धर्म विशेष में रही लेकिन उन्हें श्रीकृष्ण के रूप माधुर्य, उनका लावण्य, उनका लोक-कल्याणधर्मी व्यक्तित्व इतना लुभावना लगा कि उनकी यही कामना रही कि अगले जन्मों में मुझे ब्रज की गलियों में खेलने व नंद की गाय चराने में आनंद आएगा। और, यदि मनुष्य का जीवन न मिल सके तो पत्थर बनना भी स्वीकार है। लेकिन पत्थर वे बनना चाहेंगे उस पर्वत का, जिसे भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी उँगली पर धारण किया। कवि रसखान तीनों लोकों के राज्य से बढ़कर ब्रजभूमि, श्रीकृष्ण लीला स्थल के साथ अपने संसर्ग को श्रेयस्कर मानते हैं। उन्हें श्रीकृष्ण की बाल लीलाएँ अत्यंत प्यारी हैं। इसीलिए तो उनकी कविता में गोपियाँ कौए के भाग्य को बड़ा मानती नज़र आती हैं क्योंकि उसे बालक कृष्ण के हाथ से उनकी जूठी रोटी खाने का अवसर मिला।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  इस पाठ का मुखर वाचन करवाएँ। वाचन में सरसता व लोच का तथा उतार-चढ़ाव का विशेष ध्यान रखें। बच्चों को सवैया, दोहा, चौपाई, सोरठा, आदि के बारे में जानकारी दें। सवैया और चौपाई में तथा दोहा और सोरठा में अंतर बताएँ। इसके लिए गूढ़ व्याकरणिक बिंदुओं से बचते हुए, उदाहरणों का सहारा लेना ही श्रेयस्कर होगा।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 79** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य हिंदी भाषा के व्याकरण-पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - क्षेत्रीयता के प्रभाव में कुछ शब्द अपभ्रंश रूप में विभिन्न क्षेत्रों में बोले जाते हैं। ऐसे कुछ शब्दों की सूची बच्चों के आपसी सहयोग से बनवाई जा सकती है। फिर उन शब्दों के मानव रूप से उनका परिचय करवाया जा सकता है।
  - पर्यायवाची शब्दों की परिभाषा दोहराएँ। जो शब्द पर्यायवाची परिवार के बाहर के हैं, उनके अर्थ पूछें व बताएँ।
- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**

- ❖ श्रीकृष्ण के जीवन से संबंधित कई प्रसंग हैं। इन प्रसंगों का वाचन करते समय लय, गतिशीलता, हाव-भाव, आदि पर विशेष ध्यान देने को कहें ताकि श्रोता-बच्चे ऊबें नहीं। रसखान, रहीम, कबीर, बिहारी, भूषण, तुलसी, आदि कवियों के बारे में संक्षिप्त परिचय दें ताकि बच्चे सामूहिक रूप से परियोजना कार्य तैयार कर सकें।
- ❖ सूचना-लेखन भी एक साहित्यिक विधा है। यह रचनात्मक अभिव्यक्ति का अंग है। सूचनाएँ सटीक हों और कम-से-कम शब्दों में कार्यक्रम से संबंधित सारी बातें स्पष्ट करती हों, यह बताएँ।